सिलाई कलां के अर्न्तगत माप

विषय वस्तु

क्रमांक	विषय वस्तु	पृष्ठ संख्या
1	➢ सिलाई	02—02
2	➢ उचित साधन	02—03
3	➢ सिलाई का ढ़ग	03—04
4	➢ सिलाई के प्रकार	04—06
5	➢ सिलाई की जरूरत वाले व्यवसाय	07—09
6	➢ सिलाई के औजार	09—10
7	➢ टाँके	11—11
8	➢ टाँके के प्रकार प्रयोग व बनाने की विधि	12—24
9	➢ सिलाई हेतु मापन	24—25
10	➢ मापन के उपकरण	25—29
11	➢ कटिंग हेतु उपकरण	29—31
12	➢ मापन के प्रकर	31—38
13	➢ मापन के समय की सावधानियाँ	38—39

सिलाई कलां के अर्न्तगत माप

सलाई-

कपड़ा, चमड़ा, फर, बार्क या कसी अन्य लचीली वस्तु को आपस में सूई एवं धागों की सहायता बांधना सलाई कहलाती है।

घरेलू सलाई

घरेलू सलाई अ धकतर मरम्मत, रफू, कपड़ों को ठीक करना तथा बच्चों के कपड़ों से संबं धत होती है। इसके लये उ चत साधन, उ चत कपड़े और उ चत तरीके का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

उ चत साधन

सलाई के आवश्यक साधनों में सर्वप्रथम सूई का स्थान आता है। सूइयाँ कई प्रकार की होती हैं, कुछ मोटी, कुछ बारीक, इनकों नंबरों द्वारा वभाजित कया गया है। जितने अ धक नंबर की सूई होगी उतनी ही बारीक होगी। मोटे कपड़े के लये मोटी सूई का प्रयोग होता है और बारीक कपड़े के लये पतली सूई का। मोटे कपड़े को बारीक सूई से सीने से सूई टूटने का डर रहता है तथा मोटी सूई से बारीक कपड़े को सीने से कपड़े में मोटे मोटे छेद हो जाते हैं, जो

बड़े भद्दे लगते हैं। अ धकतर पाँच नंबर से आठ नंबर तक की सूई का प्रयोग होता है।

साधन में दूसरा स्थान धागे का है। धागा कपड़े के रंग से मलता हुआ होना चाहिए तथा कपड़े के हिसाब से ही मोटा या बारीक भी होना चाहिए। वैसे अ धकतर सलाई के लये ४० और ५० नंबर के धागे का ही प्रयोग कया जाता है।

तीसरा स्थान कैंची का है। कैंची न तो बहुत छोटी हो और न बड़ी। उसकी धार तेज होनी चाहिए, जिससे कपड़ा सफाई से कट सके।

चौथा स्थान इंची टेप का होता है, जो कपड़ा नापने के काम में आता है; फर निशान लगाने के रंग या रंगीन पेंसलों का प्रयोग होता है। सीधी लाइनों के लये यदि स्केल भी पास हो तो बहुत अच्छा होता है। सलाई के लये अब अ धकतर मशीन का प्रयोग होता है। इससे सलाई बहुत शीघ्र हो जाती है। सलाई के लये अंगुस्ताने की भी आवश्यकता होती है। इससे उंग लयों में सूई नहीं चुभने पाती।

सलाई का ढंग

सलाई करते समय हाथ से कपड़े को ठीक पकड़ना तथा सूई को ठीक स्थान पर रखना अत्यंत आवश्यक है। सलाई करते समय आप दाहिने हाथ से बाएँ हाथ की ओर चलते हैं। कसीदे में इसके वपरीत बाएँ हाथ से दाएँ की ओर जाया जाता है।

सलाई की तुरपन तीन प्रकार की होती है: धागा भरना, तुरपन और बा खया करना।

धागा भरना (Running Stitch)

इसमें कपड़े को ठीक से पकड़ना अत्यंत आवश्यक है। यदि कपड़ा ठीक नहीं पकड़ा गया तो धागा भरने में काफी समय लग जाता है। आप दोनों हाथों में कपड़ा पकड़ दाएँ हाथ के अँगूठे और प्रथम उँगली के बीच सूई रख, दाएँ से बाई ओर चलते हैं। यह कपड़ों को जोड़ने के काम में लाया जाता है।

तुरपन (Hemming Stitch)

यह कनारे या सलाई को मोड़कर सीने के काम आती है।

ब खया (Back Stitch)

यह भी दो कपड़ों को जोड़ने के काम में लाया जाता है। पर यह तुरपन धागा भरने से अ धक मजबूत होती है। इसका उधेड़ना अत्यंत कठिन होता है। इस

तुरपन में पहले सूई को पछले छेद में डालकर दो स्थान आगे निकाला जाता है और इस प्रकार ब खया आगे बढ़ता जाता है।

सलाई के प्रकार

सलाई के उपर्युक्त तीन प्रकार होते हैं। इनके अतिरिक्त गोट लगाना, दो कपड़ों को जोड़ने के व भन्न तरीके, रफू करना, काज बनाना एवं बटन टाँकना घरेलू सलाई के अंतर्गत आते हैं।

गोट लगाना (Piping)

गोट लगाने के लये कपड़े को तिरछा काटना अत्यंत आवश्यक है। गोट दो प्रकार से लगती है। एक तो दो कपड़ों के बीच से बाहर निकलती है। दूसरी एक कपड़े के कनारे पर उसको सुदंर बनाने के लय लगती है। प्रथम प्रकार की अ धकतर रजाइयों इत्यादि में यहाँ जहाँ दोहरा कपड़ा हो वहीं, लग सकती है। गोट को दोहरा मोड़कर दो कपड़ों के बीच रखकर सी (सल) दिया जाता है। दूसरे प्रकार की गोट लगने के लये पहले कपड़े पर गोट धागा भरकर टाँक दी जाती है। इसमें गोट को खींचकर तथा कपड़े को ढीला लेना होता है। फर दूसरी ओर मोड़कर तुरपन कर दी जाती है।

दो कपड़ों को जोड़ने के लये व भन्न प्रकार की सलाइयों का प्रयोग होता है।

(क) सीधी सलाई - इनमें दो कपड़ों को एक दूसरे पर रख कनारे पर १/४ से १ इंच दूर तक सीधा धागा भर दिया जाता है, या ब खया लगा दी जाती है।

(ख) चौरस सलाई (Flat Fell Seam) - इसमें एक कपड़े को ज्यादा तथा दूसरे को उसने थोड़ा कम आगे निकाल कर धागा भर दिया जाता है। फर इस सलाई को मोड़कर उस पर तुरपन कर दिया जाता है।

(ग) दोहरी चौरस सलाई (Stitehed Fell Seam) - इसमें चत्र की भाँति दो कपड़ों के कनारों को दूसरे के ऊपर रख दोनों ओर से तुरपन कर दी जाती है।

(घ) उलटकर सलाई (French Seam) इसमें दो कपड़ों को मलाकर बिलकुल कनारे पर धागा भर देते हैं और फर उन्हें उलटकर एक और धागा भर देते हैं। इससे कपड़े के फुचड़े (कपड़े का धागा निकालता है) सब सलाई के अंदर हो जाते हैं और सलाई पीछे की ओर से भी अत्यंत साफ और सुंदर दिखती है।

रफू करना (Mending)

रफू के लये जहां तक संभव हो धागा उसी कपड़े में से निकालना चाहिए तथा कपड़े के धागों के रुख के अनुसार सूई को चलाना चाहिए, जैसा चत्र ९

में दिखाया है। इस प्रकार सीधे फटे में सीधी सीधी सलाई की जाती है, पर यदि कपड़ा तिरछा फटा हो तो आड़ा सीधा दोनों और सीना होता है।

पैवंद लगाना (Patching)

जहाँ पर आपको पैवंद लगाना हो वहाँ फटे स्थान से बड़ा एक अन्य चौकोर कपड़ा काटकर उसको फटे स्थान पर तुरपन से टाँक दीजिए। इसके पश्चात् उलटकर फटे स्थान को चौकोर काटकर कनारे मोड़कर तुरपन कर दीजिए।

काज (Button-hole) बनाना

आवश्यकता के अनुसार काज काटकर, काज के दोनों ओर धागा भरकर काज की तुरपन से उसे चत्र ११. की भांति जींद देते हैं। बटन का जोर जिस ओर पड़ता है उसके दूसरी ओर से काज प्रारंभ कर पुनः वहीं सलाई समाप्त की जाति है। इस प्रकार यदि खड़ा काज है तो आरंभ नीचे कया जाता है, पर पड़े काज को कनारे के दूसरी ओर से आरंभ करते हैं।

बटन टाँकना

बटन में सदैव दो या अ धक छेद बने होते हैं। उन छेदों में से सूई निकालनकर बटन को कपड़े पर सी देते हैं।

सलाई की जरूरत वाले व्यवसाय

- कताबसाज
- मोची
- Corsetier
- Draper
- Dressmaker
- Glover
- Hatter
- Milliner
- Parachute rigger
- Quilter
- Sailmaker
- Seamstress
- दर्जी
- Taxidermist
- Upholsterer

सलाई के औजार **(Sewing tools and accessories)**

- stitching awl
- bobbin
- bodkin
- dress form
- dressmaker's or tailor's shears

- measuring tape
- needle
- pattern
- pattern weights
- pin
- pincushion
- rotary cutter
- scissors
- seam ripper
- sewing table
- tailor's chalk
- thimble
- thread/yarn
- tracing paper
- tracing wheel
- wax, often beeswax
- sewing box

सलाई के सहवर्ती कार्य

- buckle
- button (buttons can be sew-through or have shanks.)
- toggle
- chinese frog
- eye
- hook

- hook-and-loop tape (often known by brand name Velcro)
- snap
- zipper
- ties

सलाई के साथ लगने वाले सामान (Finishing and embellishment)

- beaded fringe & trim
- elastic
- piping/cording/welting
- eyelet
- grommet
- heading
- interfacing
- rivet
- trims (fringe, beaded fringe, ribbons, lace, sequin tape)

तरह-तरह की सीवन (List of stitches)

The two main stitches that sewing machines make of which the others are derivatives are lockstitch and chain stitch.

- back tack
- backstitch - a sturdy hand stitch for seams and decoration
- basting stitch (or tacking) - for reinforcement
- blanket stitch

- blind stitch (or hem stitch) - a type of slip stitch used for inconspicuous hems
- buttonhole stitch
- chain stitch - hand or machine stitch for seams or decoration
- cross-stitch - usually used for decoration, but may also be used for seams
- darning stitch
- embroidery stitch
- hemming stitch
- lockstitch - machine stitch, also called straight stitch
- overhand stitch
- overlock
- pad stitch
- padding stitch
- running stitch - a hand stitch for seams and gathering
- sailmakers stitch
- slip stitch - a hand stitch for fastening two pieces of fabric together from the right side without the thread showing
- stretch stitch
- topstitch
- whipstitch (or oversewing or overcast stitch) - for protecting edges
- zig-zag stitch

टाँकेः–

कपड़ों की सिलाई वेफ बाद कपड़ों में टाँवेंफ लगाने का काम किया जाता है। ये टाँवेंफ अलग–अलग जगहों पर अलग–अलग तरह से इस्तेमाल होते हैं। हुक व आई में टाँवेफ लगाने का काम। कपड़ों में बटन लगाने का काम। कभी–कभी कपड़े थोड़ा पफट जाते हैं या कट जाते हैं तो उनमें रपूफ करने का काम। कपड़ा अध्कि पफट जाय तो उसमें पैबन्द लगाने का काम। पुराने कपड़े जैसे कमीज, पैंट, पुरानी साड़ी, वुफर्ता, रजाई का खोल का सदुपयोग करना। आइए, इस पाठ में हम जानें कि टाँकों द्वारा हम कपड़ों को वैफसे सही तथा सुन्दर बना सकते हैं।

टाँकों का अर्थः–

सुई में धगा डालकर कपड़े की तह में से कपड़े से ऊँचा–नीचे करके धगे को निकालने से धगे का जो रूप आता है उसे टाँका कहते हैं।

टाँको की आवश्यकताः–

1. कपड़े के दो टुकडों को जोडने के लिए।
2. अच्छी सपफाई व अन्तिम रूप देने के लिए।
3. अच्छा आकार देने के लिए।
4. कपड़ों को संभालने के लिए।
5. कपड़ों को सुन्दर व आकर्षक बनाने वेफ लिए।

टाँके के प्रकार, प्रयोग व बनाने की विधि

टाँके दो प्रकार के होते है।

स्थाई टाँके : यह टाँके स्थाई रूप से लगाए जाते है। अर्थात वस्त्रा तैयार करने के बाद इन्हे खोला या निकाला नही जाता।

अस्थाई टाँके : यह वो टाँके हैं जो पक्की सिलाई करने के बाद खोल दिये जाते है।

स्थाई टाँकेः–

1. **रजाई का टाँका :** कपड़े के दो या दो से अधिक तह को एक साथ जमाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। इस टाँके में सुई को हर बार आड़ी दिशा में से निकालकर बनाया जाता है। इस टाँके को कपड़ों के उल्टी तरपफ बनाया जाता है जिससे सीध तह पर केवल–मात्रा बिन्दु–बिन्दु नजर आता है। धगा उल्टी तरपफ तिरछा–तिरछा नजर आता है। इस टाँके के द्वारा कोट के लैपेल के अन्दर की तह जमायी जाती है। यह टाँका हाथ से व विशेष क्विल्टिंग–मशीन से बनाया जा सकता है।

2. **बखियाः** यह दो कपड़ों को जोड़ने के लिए किया जाता है। पहले यह हाथ से तथा अब मशीन से बनाया जाता है। इसे बनाने के लिए सुई में धगा

डालकर कपड़े में से सुई निकालते है। एक टाँका लेने के बाद पिफर पीछे से दोबारा टाँका लिया जाता है। इस विध् िसे बनाए टाँवेफ को बखिया कहते हैं।

हाथ का बखिया

3. **चाम्पे का टाँका :** इसे पफाईन स्टिच भी कहते हैं। यह टाँका करीब–करीब बखिये के तरह से बनाया जाता है। इसमें केवल मात्रा यह अन्तर है कि इसमें एक बार सुई कपड़े से निकालने के बाद दो या तीन ;कपड़ेद्ध का तार पीछे लेकर सुई दुबारा कपड़े के अन्दर डाली जाती है। इसमें सीधी तरपफ में बिन्दु व उलटी तरपफ में धगा नजर आता है।

चाम्पे का टँका (फाईन स्टिच)

4. **तुरपाई का टाँका:** यह टाँका अकसर वस्त्रा में मोड़ने ;टर्निंगद्ध को पक्का करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है। यह नीचे के कपड़े की एक तार और ऊपर के कपड़े की दो तारें पकड़कर किया जाता है।

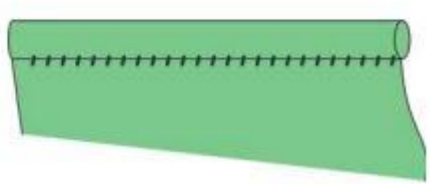

5. **काज का टाँका:** इस टाँके द्वारा वस्त्रा में बटन होल, आई लेट तथा सजावट की जाती है। वस्त्रा में कटे हुए काज के स्थान पर किनारे से आध प्वाईट अन्दर में से सुई निकालकर सुई के ऊपर से धगे को पफेरा डालकर बनाया जाता है। यह प्रक्रिया बार–बार करके कटे हुए काज के किनारे को एक सिरे से दूसरे सिरे तक पक्का किया जाता है। अन्त में ठोका बनाया जाता है।

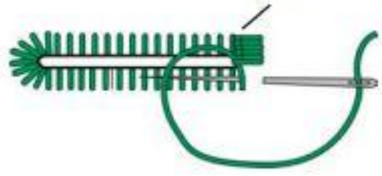

काज का टाँका

6. **हुक और आइ :** वस्त्रा में रखे खुले भाग को बंद करने के लिए हुक और आई बनाई जाती है। ब्लाऊज और पैंट में हुक का प्रयोग होता है किन्तु दोनों हुक भिन्न होते है। ब्लाऊज के हुक में दो छेद होते है और उसकी आई धगे की बनाई जाती है। पैंट के हुक में तीन छेद होते हैं। यह बटन होल स्टिच से लगाए जाते है।

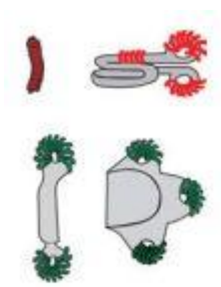

7. **बटन लगाना :** कपड़ों में लगाए जाने वाले बटन कई तरह के होते हैं: कद्ध टिच बटन यह बच्चों के कपड़ों में लगाये जाते हैं। खद्ध काज बटन : ये बटन अध्कितर पुरूषों की पोशाक में लगाते हैं। गद्ध हुक और आई : वस्त्रा

के खुले भाग को बंद करने के लिए हुक और आई लगाते हैं। जैसे ब्लाउज, चोली आदि में हुक और आई बनाए जाते हैं। घद्ध पफैन्सी बटन : यह कपड़ा लगाकर हाथ से भी बनाये जा सकते हैं और बने हुए सीप, लकड़ी, प्लास्टिक वेफ विभिन्न प्रकार के बटन भी मिलते है। इन बटनों के द्वारा कपड़े को आकर्षक व सुन्दर बनाया जा सकता है। ड.द्ध कोट के बटनः ये प्लास्टिक व धतु के बने होते है। कोट के बटन में चार सुराख होते है। इन में सुई डालकर बटन लगाते है। कोट के बटन लगाते समय दो बातों का ध्यान रखना चाहिएः (i) बटन वेफ काज की लम्बाई इतनी हो कि बटन आसानी से डाला जा सवेफ।

(ii) बटन इतना ही ऊँचा हो कि वह कोट वेफ ऊपरी सतह पर बिना खिंचाव वेफ समा सवेफ।

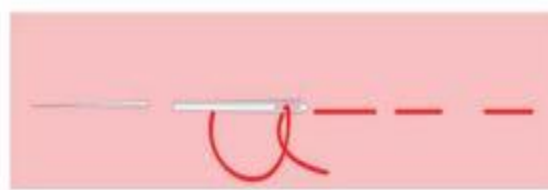

(टेढा कच्चा)

जहां दो कच्चे एक साथ करने की आवश्कता होती है वहाँ पर इसका प्रयोग होता है। इससे कार्य शीघ्र होता है। यह टाँका कपड़े की तह को इन्टर लाइनिंग के साथ मजबूती से पकड़कर रखना हो, चिरा हुआ सीम का किनारा पकड़कर रखना आदि स्थानों पर प्रयोग किया जाता है। यह टाँका, सुई को कपड़े में से तिरछी दिशा में निकालकर बनाया जाता है।

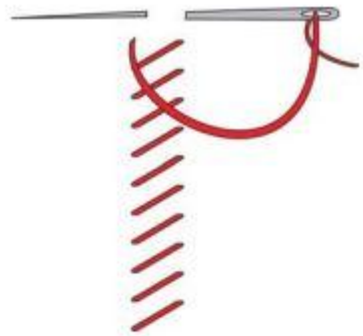

टेढ़ा कच्चा टाँका

(iii) परसूज का टाँका

इसे रनिंग स्टिच भी कहते हैं। यह एक प्रकार का कच्चा टाँका ही है। इसमें छोटे-छोटे बराबर टाँके लिये जाते हैं। इसमें धागा ऊपर व नीचे बराबर-बराबर दिखाई देता है। इस टाँके द्वारा वस्त्र में चुन्नट डालना, स्मोकिंग के लिए चुन्नट बनाना तथा वस्त्र में किसी-किसी स्थान पर छोटी गोलाइयों को बनाने के लिए भी प्रयोग किया जाता है।

परसूज टाँका

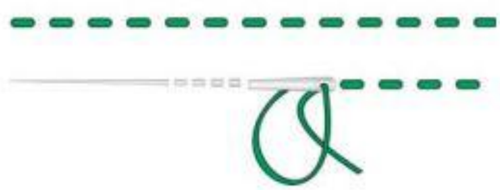

सजावटी टाँक

विभिन्न वस्त्राों को सजाने के लिए सजावटी टाँकों को प्रयोग किया जाता है। ;पद्ध कम्बल टाँका इसका प्रयोग अध्कितर कम्बल के किनारों को बांध्ने के लिए किया जाता है इसलिए इसे कम्बल टाँका कहते है। यह कई तरह से बनाया

जाता है जैसे—सीध या वी शेप में। यह सजावट के लिए कपड़ों पर भी किया जाता है। इसमें धगा सुई के आगे रखकर कपड़े में से सुई निकाली जाती है।

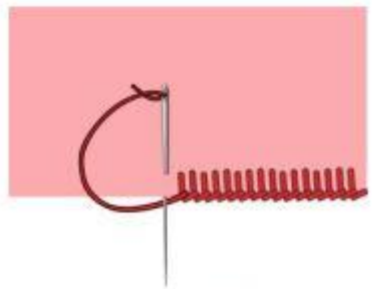

कम्बल टाँका

हेरिंग बोन टाँका

इसे बनाने के लिए दो लाइनों में टाँके लिए जाते है। टाँका एक बार एक लाइन पर तथा दूसरी बार दूसरी लाइन पर लेते हुए चलता है। इसे मच्छी टाँका भी कहते है। ऊनी वस्त्राो

की टर्निंग को काबू करने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है। टाँके की लंबाई 2 सूत से अध्कि नहीं होनी चाहिए। इसका प्रयोग बच्चों के वस्त्राों व रूमालों के किनारे को सजाने के लिए भी किया जाता है।

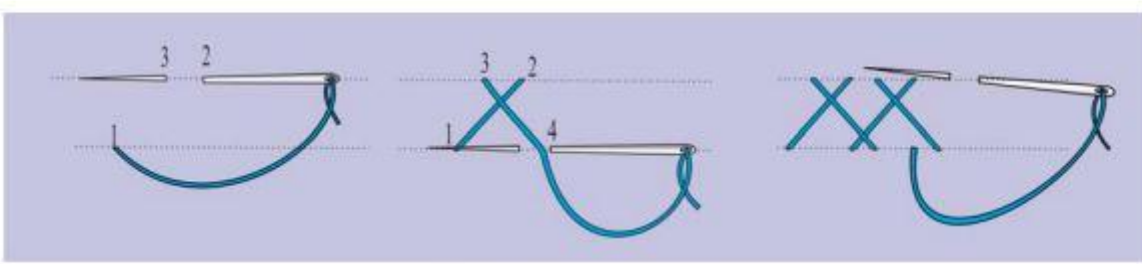

हेरिंग बोन स्टिच

(iii) मछली ;पिफश बोनद्ध टाँका यह मछलियों की हड्डियों की भाँति दिखता है। यह टाँके एक दूसरे से बंध्े होते है। इनका प्रयोग मोटे कपड़ों व बच्चों के

कपड़ों में घेरे आदि पर किया जाता है। धगा आगे रखते हुए यह टाँका बनाया जाता है।

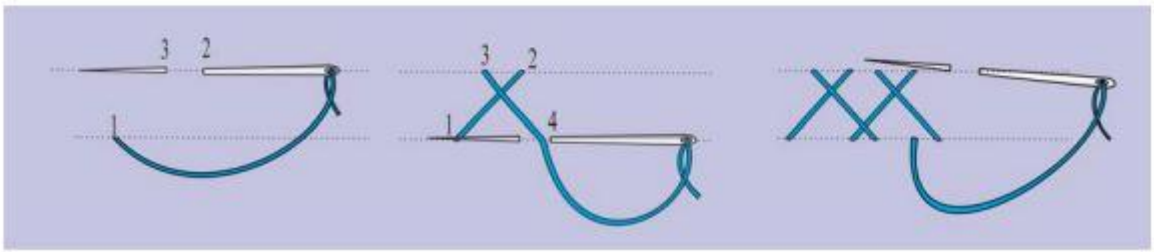

मछली (फिश बोन) टाँका

(iv) पफैदर टाँका यह टाँका पक्षियाँ के परों के भाँति दिखता है। टाँका हर बार तिरछी दिशा मे ंलिया जाता है जिसमें धगा कपड़े के सीधे तरपफ तिरछा–तिरछा गिरता है। इसलिए इसे पफैदर स्टिच कहते है। यह चादर, मेजपोश व बच्चों के वस्त्राों पर सजावट के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह 2, 3 लाइनों में भी बनाया जा सकता है। यह सिंगल और डबल दो तरह से बनाया जाता है। धगे को सुई के आगे रखते हुए यह टाँका बनाया जाता है।

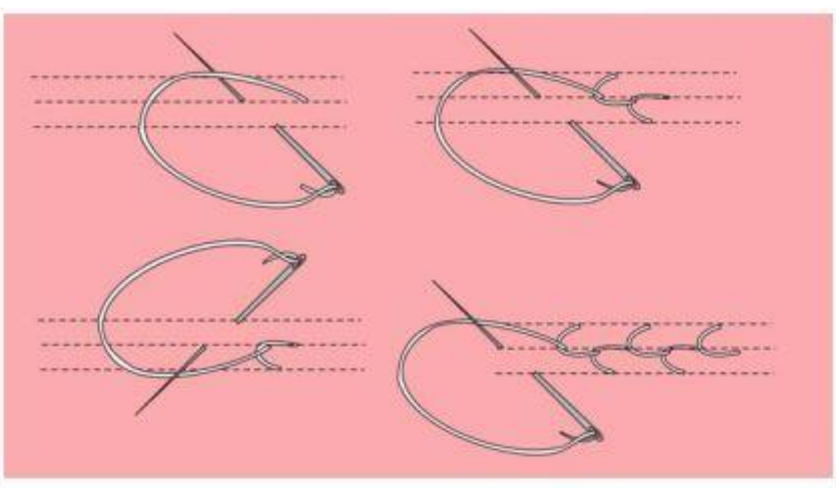

फैदर टाँका

(v) डंडी टाँका

इसे उल्टी बखिया भी कहते है। इसमें टाँका पीछे से लिया जाता है। यह डंडी के समान प्रतीत होता है, इसलिए इसे डंडी टाँका कहते है। कढ़ाई में फूलों की डंडियाँ आदि बनाने के लिए इसका प्रयोग होता है। धागे को अपनी तरफ रखते हुए बखिये के समान टाँका लेते है।

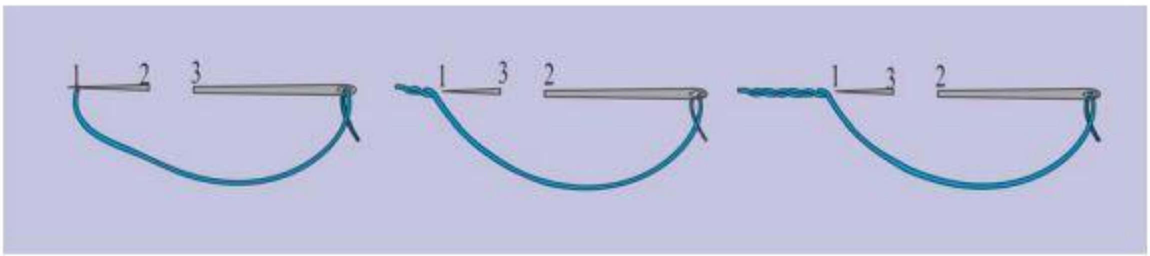

डंडी टांका

(vi) चेन टाँका

इस टाँके की बनावट सांकल (चेन) के समान होती है। यह बनाते समय सुई के गिर्द धागे का चक्र दिया जाता है। जिस स्थान से धागा निकलता है उसी स्थान से धागे को आगे रखते हुए टाँका आगे की ओर निकाला जाता है।

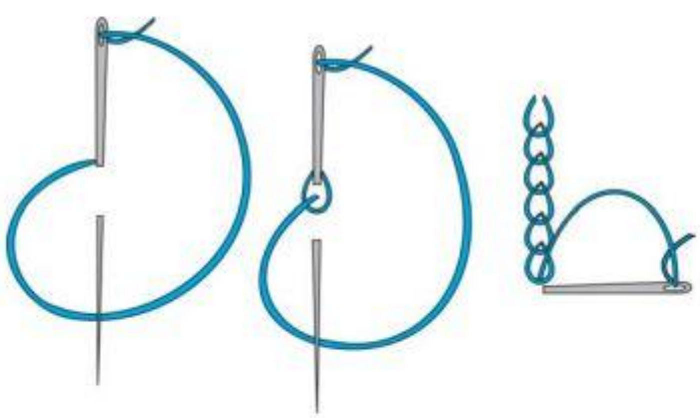

चेन टाँका

(vii) लेजी डेजी टाँका

यह चेन स्टिच की तरह होता है। यह टाँका अलग-अलग लेकर बांधा जाता है । इसमें चेन नहीं बनती है। यह भिन्न-भिन्न रंगों से बनाया जाता है। इसमें भी धागा सुई के गिर्द रखा जाता है। फूल आदि बनाने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है। हर टाँके को बनाने के बाद बांध दिया जाता है।

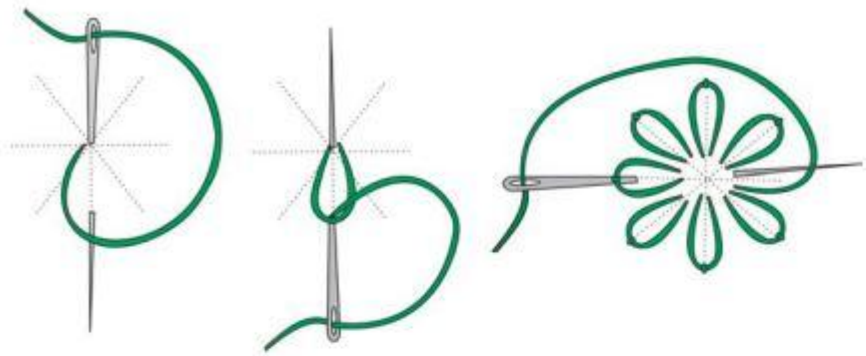

लेजी डेजी टाँका

(viii) साटन टाँका

इसका नाम साटन के कपड़े के आधार पर रखा गया है। यह कपड़े के समान समतल होता है। इसमें टाँका बिलकुल पास-पास बनाया जाता है। इन्हें बनाते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि टाँके एक समान हो।

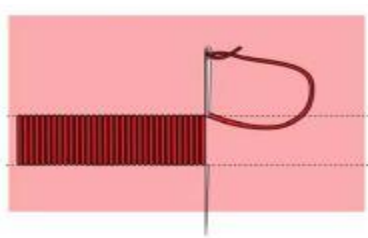

साटन टाँका

(ix) क्रॉस टाँका

इसे दसूती का टाँका भी कहते है। पहले एक टाँका तिरछा लिया जाता है फिर उसी पर एक और तिरछा टाँका बनाया जाता है। जिससे क्रॉस बनते हैं। इसका प्रयोग अधिकतर मैटी, केसमेन्ट आदि पर किया जाता है। वस्त्रों की सुन्दरता बढ़ाने व रूमालों को सजाने के लिए भी इसका प्रयोग किया जाता है।

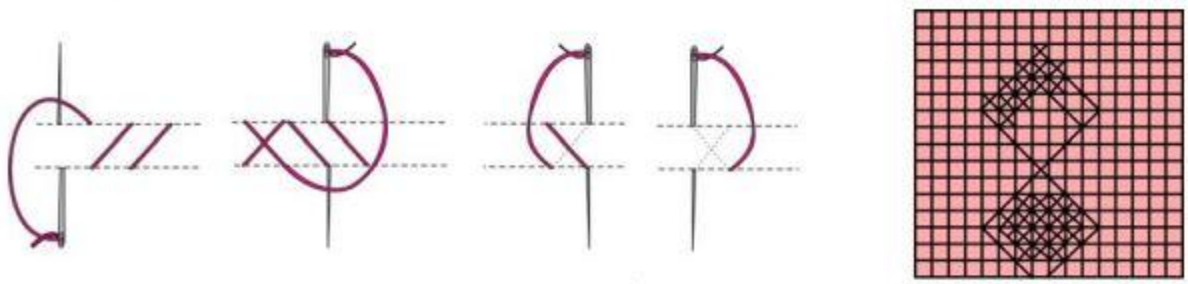

क्रॉस टाँका

वस्त्रों की मरम्मत–

पफटे कपड़ों की मरम्मतः– अगर घर में किसी कपड़े की सिलाई उध्ड़ जाती है, उसे तुरंत सिल लेना चाहिए। अगर आपने देर की तो कपड़ा ज्यादा उध्ड़ सकता है। अच्छा तो यही होगा कि मशीन से बखिया कर लें। परन्तु यदि घर में मशीन नहीं है तो चिंता की बात नहीं है। आप हाथ से भी बखिया कर सकते है।

रपफू करना

छोटे छेदों को रपफू करके आप उन्हें ठीक कर सकते है। रपफू करने के लिए बिल्कुल मिलते–जुलते रंग का धगा लें। यदि हो सके तो उस कपड़ें के सिलाई वाले भाग से एक धगा खींच ले। पिफर उसी धगे से रपफू करे। रपफू करने के लिए पहले लंबाई के धगे डाल ले। उसके बाद जैसे चटाई बुनते हैं, उसी तरह से एक धगा ऊपर, एक धागा नीचे रखते हुए आड़े धगे डाल लें। आपका कपड़ा रपफू हो जाएगा। रपफू करने से पफायदा यह है कि कपड़े की मरम्मत हाथ के हाथ हो जाती है। देखने में भी पता नही लगता है।

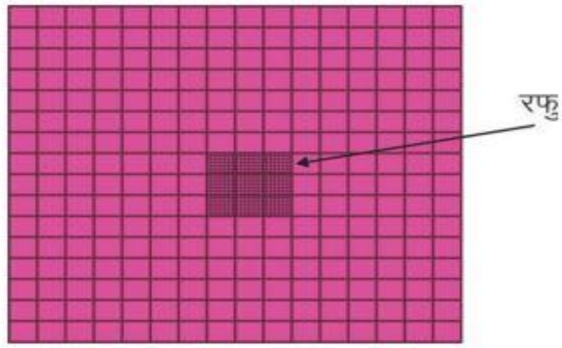

पैबंद लगाना :.

अगर कपड़ा किसी चीज़ से अटक कर सीध कट गया हो तो क्या करेंगे? उस पर मशीन से या हाथ से सीधी सिलाई कर लीजिए। किसी कपड़े की पफटी हुई जगह पर दूसरे कपड़े का टुकड़ा लगा कर भी आप मरम्मत कर कसते है। इसे पैबंद लगाना कहते है। आइए पैबंद लगाना सीखेंः जिस आकार का छेद है उसी आकार का पैबंद काट लीजिए।

- जितना बड़ा छेद है उससे डेड़ (1-5cm) से.मी. कपड़ा चारों ओर ज्यादा लें। z इसे चारों तरपफ से थोड़ा मोड़ते हुए छेद के नीचे टांक ले।
- छेद के किनारों को भी सपफाई से अंदर मोड़ कर टांक लें।
- एक बात ध्यान में जरूर रखें कि पैबंद का कपड़ा मिलता–जुलता हो।
- कपड़े में से पैबंद आड़ा ना लगाएँ यह देखने में भद्दा लगता है।

सिलाई हेतु मापन

मापन के बिना वैज्ञानिक किसी भी प्रकार का प्रयोग या सि(ांत नहीं बना सकते हैं। मापन विज्ञान एवं रसायन के अलावा खेती, अभियांत्रिाकी, उत्पादन, वाणिज्य, निर्माण और अनेक क्रियाओं तथा व्यवसाय के काम आता है। दैनिक जीवन में मापन का विशेष महत्व है। यह मूल कार्यों के लिए बहुत महत्व रखता है। उदाहरण के लिए बालक के तापमान का मापन, समय–सारणी बनाना, दवाईयों को समय पर देना, वजन नापना और अन्य पदार्थों के परिणाम जानना आदि। मापन का प्रयोग किसी वेशभुषा को बनाने के लिए भी किया जाता है। सिलाई करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि आप भली भांति मापन करें अन्यथा वेशभूषा उपयुक्त नहीं होगी। उचित मावन और सही कटिंग से वेशभूषा उपयुक्त तो होती है, साथ ही आप व्यवसायिक रूप से सुंदर और अच्छे कपड़े/वेशभूषा बना सकते हैं।

सिलाई में उचित मापन व कटिंग का महत्व–

कोई भी वेशभूषा बनाने के लिए मापन लेना पहला कदम है। एक अच्छा दर्जी बारीकी पर ध्यान देता है। अनेक कारणों से उचित शारीरिक मापन और कटिंग आवश्यक है। ग्राहक के माप से कुछ सें.मी. कम या ज्यादा होने से उसके व्यक्तित्व व वेशभूषा पर प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, बडे कपड़े पहनने से ऐसे लगता है कि एक महिला ने बडे व्यक्ति के कपड़े पहन रखे हैं जबकि टाइट कपडों में यह असहज महसूस कर सकती है। उससे भी वे कपडे किसी और के पहने हुए लगेगें। उचित मापन से आपकी शैली ही नहीं बल्कि कपडों को पहनने का सलीका भी बदल जाता है। उदाहरण के लिए, एक बडा व्यक्ति

यदि छोटी जैकेट पहनेगा तो या तो वह पफट जाएगी या बटन टूट जाएगें। उचित शारीरिक मापन दर्जी के लिए आवश्यक है क्योंकि कपडे के लिए आवश्यकता होती है। हर सूट या वेशभूषा के निर्माण के लिए सामग्री की आवश्यकता होती है। यदि दर्जी ज्यादा कपडे का प्रयोग करेगें तो ज्यादा खर्च आएगा। साथ ही कटने के पश्चात् कपडे को वापिस नहीं बनाया जा सकता। सही मापन के बिना कपडे व सामग्री सब हमेशा के लिए खराब हो जाते हैं।

मापन उपकरण –

समय व ध्नराशी को बचाने के लिए उचित सिलाई उपकरण आवश्यक है। हर मापन के लिए एक विशेष उपकरण की आवश्यकता होती है। सिलाई हेतु मापन उपकरण और शारीरिक मापन बेहद महत्वपूर्ण है। इससे वेशभूषा पूर्ण रूप से पिफट होती है। मापन अध्कितर आवश्यकता पर और सही प्रकार से लिए जाते

1- नापने का पफीता (Tape Measure)

चित्र 7.1 : नापने का फीता

मापने का पफीता लगभग 60 इंच लंबा और 5.8 चौडा होता है। यह प्रतिवर्ती (reversible) होता है। इसमें एक तरपफ इंच एवं दूसरी तरपफ से.मी. का मापन

दिया होता है। यह सही मापन लेने के लिए उचित माध्यम है। इसका लचीला पदार्थ खिंचता नहीं है तथा कार्य पूरा होने पर आसानी से तह बन जाती है। इसी विशेषता के कारण यह सिलाई हेतु महत्वपूर्ण उपकरण है। सभी प्रकार के मापन आसानी से किए जा सकते हैं।

2.यार्ड छडी (Yard Stick)

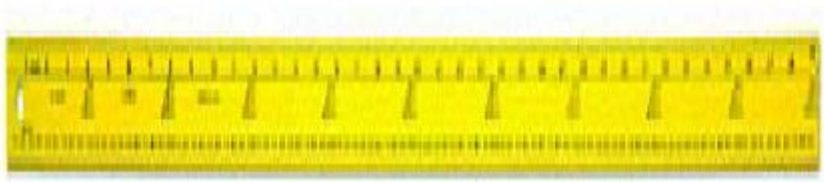

चित्र 7.2 : यार्ड छडी

यार्ड छडी में दोनों इंच और सेंटीमीटर होते हैं। यह एक आसान उपकरण है जो कपडे के अनुसार कार्य करता है। कपडे के धगे के आधर पर इस उपकरण का प्रयोग होता है। कपडे खरीदते समय इस उपकरण का प्रयोग किया जाता है। यह लकडी या धतु का बना होता है। पहनावा बनाने व कपडे जांचने के लिए यह प्रयुक्त होता है।

3- मापदंडंड/स्केलेल (Ruler)

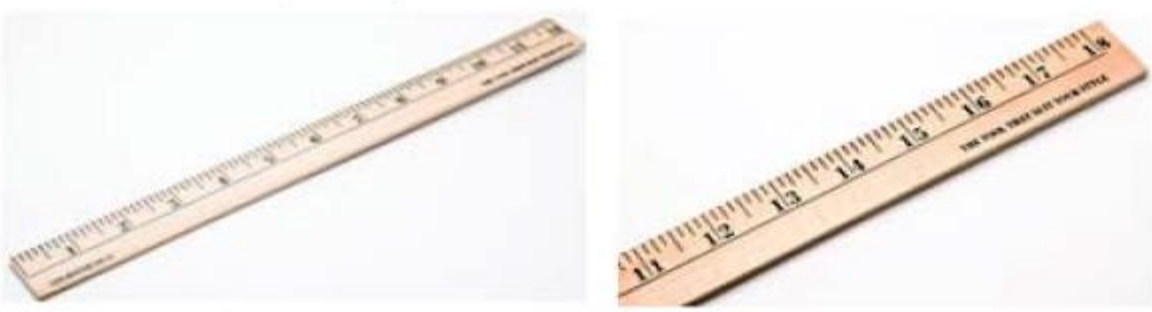

चित्र 7.3 : मापदंड/स्केल

यह अध्कितर 12 इंच या 18 इंच लंबा होता है। इसका मुख्य प्रयोग साधरण चीजों को मापने के लिए किया जाता है। यह सीधी रेखा बनाने के लिए किया जाता है। यह एक ऐसा उपकरण है जिससे अनेक क्रियाकलाप किये जाते हैं।

4- सी थ्रू मापदंडंड (See through ruler)

क सी थ्रू रूलर अध्कितर 12 से 18 इंच का होता है। इसमें अपने पिछले मापे गए निशान नजर आते है। यह सीधे किनारे, सामातंर रेखा, बटन के स्थानऋ हुक और पिन लगाने के लिए महत्वपूर्ण है। यह कपडे के रेशों की जांच करता है।

चित्र 7.4 : सी थ्रू रूलर

6.**सीम गेजेज (seam gauge)**

यह एक छोटा स्केल होता है जो लगभग 6 इंच लंबा होता है। इसे 'Sleding marker' कहा जाता है। एक तरपफ इंच और दूसरी तरपफ सेंटीमीटर होता है। इस उपकरण की सहायता से सटीक मापन किया जाता है। यह कपडे की किनारी, कोण, बटन स्थान, प्लेटस और अन्य परिवर्तनों के लिए प्रयुक्त होता है।

चित्र 7.5 : सीम गेज

7-सी थ्रू टी–स्केवेवर (see through t-square)

चित्र 7.6 : टी-स्केवर

यह उपकरण कपडे के धगों में आने वले परिवर्तनों, सीधे किनारी और वेशभूषा परिवर्तन के काम आता है।

8. वक्र रनर (Curve Runner)

चित्र 7.7 : वक्र रनर

वक्र रनर का प्रयोग कपडे में आए वक्र के मापन हेतु किया जाता है। इसके आर–पार नजर आता है, जिससे मापन आसान हो जाता है।

9- गोलेल स्केलेल (Ring Ruler)

चित्र 7.8 : गोल स्केल

इसकी सहायता से आप अलग–अलग नाप के गोलाकार वस्त्रा काट सकते है। यह एक अच्छा उपकरण है गोल तकिए अथवा घर के लिए सजावट का सामान बनाने हेतु।

कटिंग उपकरण–

आइए समझते हैं कि कटिंग उपकरण का क्या अर्थ है? यहाँ हमारा तात्पर्य कैंची, कतरनी, चक्रीय कटिंग उपकरण ;त्वजंतल बनजजपदह जववसेद्ध और सिलाई करने के लिए रिपर्स (seam rippers) आदि से है। इन सभी कटिंग के हथियारों कोसुरक्षित एवं तेज धर वाला रखना चाहिए। सभी उपकरणों की देख रेख व धर समय–समय पर करनी चाहिए। कटिंग उपकरण सिलाई हेतु बेहद महत्पूर्ण है। यह हमें सिलाई के कार्य को बेहद व्यवसायिक रूप से पूरा करने में सहायता करते है। इसकी गुणवत्ता बेहतरीन हो और बजट में भी शामिल हो सके, इस बात पर भी सिलाई कर्त्ता विशेष ध्यान देता है। सर्वश्रेष्ठ सिलाई कटिंग उपकरण उच्च स्तर की स्टेनलैस स्टील से बनती है।

1- मुडी हड्डुई कैंची (Bent handled sliears)

यह कैंची कपडे के लिए उपयुक्त है। यह वास्तविक कार्य प्रणाली और कपउे को साथ रखते है। इसकी ब्लेड का आकार ;विशेषकर नीचे वाली CysM) कपडे को सीध काटने में सहायक है। यह 7 या 8 इंच लंबी होती है। भारी स्टेनलैस स्टील से बनी यह कैंची आपके हल्के, वजनी कपडोंको काटने में भी सहायक है।

चित्र 7.9 : मुडी हुई कैंची

2- आरीदार कैंची (Pinking Sliears)

चित्र 7.10 आरीदार कैंची

आरीदार कैंची को वेशभूषा काटने वाली कैंची के साथ भ्रमित नहीं होना चाहिए। यह आरीदार या नुकीली होती है जो कपडों को वक्र आकृति में

काटता है। यह कैंची कपडों के किनारों को सजाने में सहायक है। इस प्रकार की कैंची ऐसीसिलाई बनाती है जिसमें उध्डने की कम संभावना होती है।

3- कैंची (Scissors)

चित्र 7.11 : कैंची

सिलाई कैंची का प्रयोग कपडे और कागज को काटने के लिए किया जाता है। कागज और कपडे को वास्तविक स्थिति में प्रयोग किया जाता है। यह कैंची कपडे को काटने के लिए प्रयोग की जाती है। इसलिए इसका प्रयोग कागज काटने के लिए नहीं करना चाहिए। इससे इस कैंची की धर समाप्त हो जाती है। सिलाई कैंची को ट्रिमिंग कैंची कहा जाता है क्योंकि यह किनारों से अध्कि कपडा काटने में प्रयुक्त होती है। इन कैंचियों का लगभग 6 इंच लंबा ब्लेड होता है।

मापन के प्रकार—

शरीर के अन्य अंगों का भी मापन किया जाता है। इसे तीन भाग में रखा जाता है :

- क्षैतिज मापन
- लम्बवत् मापन
- परिधीय मापन

शरीर के विभिन्न अंगंगों का माप लेनेने की प्रक्रिया :

शरीर के अनेक भागों को मापा जाता है। यह माप निम्न है :

कंधे – यह मापन बाऐं कधे के सिरे /कोन से दांये तक लिया जाता है। यह हल्का गोलाकार (Curve) होता है ताकि रीढ़ व कंधे की हड्डी का माप आ सके।

छाती (बिन्दु चौडाई)/ सर्वोच्च दूरी— यह मापन छाती के बायें बिदूं से छाती के दायें बिंदू तक किया जाता है। यह मापन छाती के आर—पार मापता है।

छाती – यह मापन इचं टपे की सहायता से मापा जाता है यह सामने पीछे व साइड सभी दिशओं को मापता है।

कमर – यह धड के नीचे उपस्थित छाटे से शारीरिक अगों का मापन करता है।

प्रथम कमर – यह मापन वहाँ से लिया जाता है जहाँ पेट सर्वाधिक बाहर हाता है।

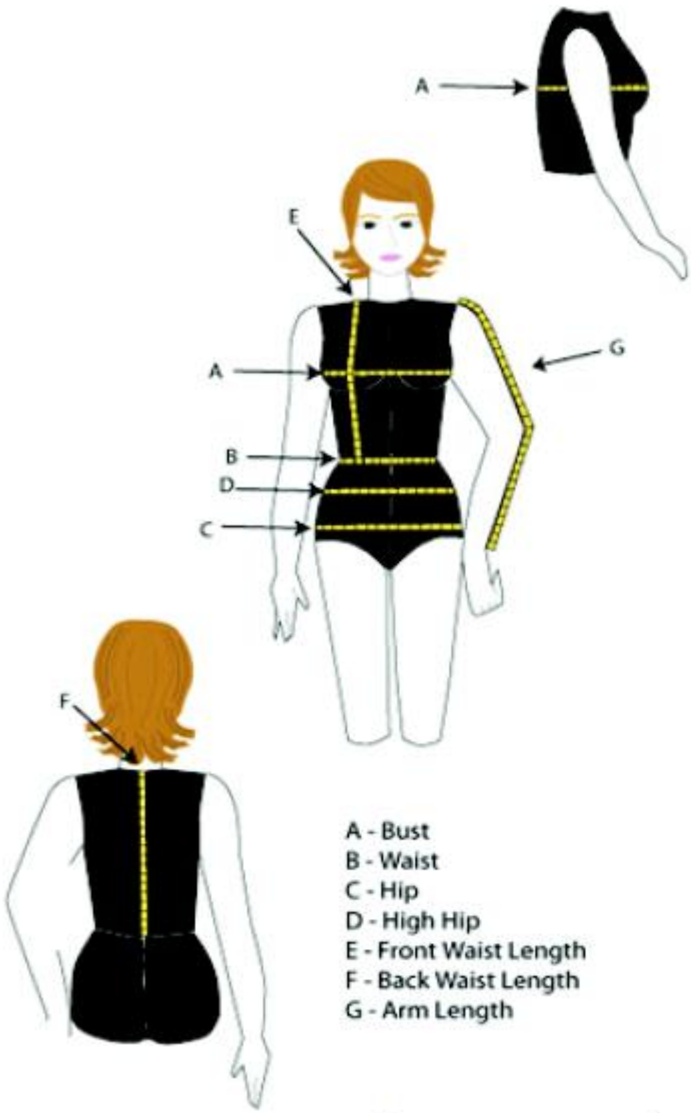

चित्र 7.14 : मापन की प्रक्रिया

द्वितीय कमर – यह कूल्हों के अनुसार मापन होता है। यह हिप का सर्वाधिक बाहय हिस्सा मापता है।

परिधि मापन

बांह मापन (Arm hole) – बांह की कटिंग के लिए मापन कंधे को गोलाकार मापा जाता है।

बांह परिधि – बांह के चारों ओर का मापन किया जाता है।

फिगर बैक (शरीर के पीछे के हिस्सों का मापन) – यह मापन पीछे के हिस्से से लिया जाता है। यह शरीर के पीछे के हिस्से के केन्द्र बिन्दू से नीचे तक लिया जाता है।

फिगर फ्रंट (शरीर के आगे के हिस्से का मापक)– यह मापन गर्दन के बिन्दू से छाती से होते हुए कमर तक का मापक है।

छाती (बिन्दु ऊँचाई)/सर्वोच्य ऊँचाई – यह गर्दन के बिन्दु से छाती के सर्वोच्य बिन्दु तक मापी जाती है।

बांह की लंबाई – यह कंधे के बिन्दु बांह की इच्छित लंबाई तक मापा जाता है।

स्कर्ट की लंबाई – यह कमर से स्कर्ट की इच्छित लंबाई तक मापा जाता है।

पैंट की लंबाई – कमर से नीचे तक पैंट की इच्छित लंबाई तक का मापन किया जाता है।

यह भी याद रखना आवश्यक है कि सटीक शारीरिक मापन किया जाए जिससे सही तरीके से वेशभूषा तैयार हो सके। यह कपडे की फिटिंग भी सही रखता है। कपडे अधिक ढीले व टाइट नहीं होना चाहिए।

मापन लेने व लिखने की क्रमबद्व प्रक्रिया–

यह भी आवश्यक है कि मापन एक निश्चित क्रम में किया जाए। यह प्रक्रिया को आरामदायक बनाता है। यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि सभी मापन सही प्रकार से लिया जाए। यह मापन को नोट करना आसान बनाता है। कपडे बनाते समय यह उपयोगी है।

शारीरिक मापन निम्न क्रम में लिए जाने चाहिए :

सबसे पहले लम्बत् मापन

1. शारीरिक लंबाई
2. कमर लंबाई
3. कंधे से कंधे की लंबाई
4. बांह की लंबाई

तत्पश्चात् क्षैतिज मापन–

1. छाती गोलाकार मापन
2. कमर गोलाकार मापन
3. हिप गोलाकार मापन
4. गर्दन गोलाकार मापन
5. हाथों गोलाकार मापन

हमें मापन को तत्कालिक रूप से नोट करना चाहिए। आप हमेशा एक मापन चार्ट को बना कर रख सकते हैं। यह मापन इस चार्ट में नोट किया जाता है। इससे गलती होने की संभावना कम हो जाती है। एक नमूना चार्ट आपकी सहायता के लिए नीचे दिया गया है।

मापन चार्ट

शरीर के अंगों के नाम		मापन इंच/से.मी.
	चोली के लिए	
1.	गर्दन	
2.	कंधा	
3.	कंधे की चौडाई/बैक चौडाई	
4.	सर्वोच्य छाती मापन	
5.	छाती	
6.	कमर	
7.	उच्च हिप	
8.	बांह को गोलाकार/कंधा साईकिल	
9.	सामने कमर माप	
10.	कंधे से छाती	
11.	हिप	
12.	छाती बिन्दु की दूरी	
13.	पीछे कमर लंबाई	
14.	आगे से गले की गहराई	
15.	पीछे से गले की गहराई	

बांह मापन	
16. ऊपरी कंधा 17. निचला कंधा 18. कोहनी 19. कलाई 20. बाजू की लंबाई	
स्कर्ट मापन	
21. कमर से हिप 22. स्कर्ट की लंबाई	
पैंट मापन	
23. पैंट की लंबाई 24. पैंट की इनसीम 25. टांग की परिधि (अ) जांघ (ब) घुटना (स) कफ (द) टकना 26. क्रोच लंबाई 27. क्रोच गहराई	

शारीरिक मापन लेते समय ली जाने वाली सावधनियाँ– शारीरिक मापन हेतु कुछ सामान्य दिशा निर्देश :

- जिस व्यक्ति का माप लेना हो वह भी सीध खडा हो। दोनों पैरों के मध्य 15 से.मी. की दूरी रखकर खडा होना आवश्यक है।
- यह बेहतर होगा कि वह व्यक्ति अपनी फिटिंग के कपडे पहनकर माप दे। ढीले कपडे ना पहने। यह मापन को प्रभावित करता है।
- यह भी आवश्यक है कि आप अंदरूनी कपडे फिटिंग के साथ वेशभूषा के नीचे पहने। यह महत्वपूर्ण है कि आप फिटिंग के कपडे जैसे टाइट गाउन, फिटिंग ब्लाज या चोली पहनें।
- यदि आप उँची एडी के चप्पल पहन कर गाउन पहनना चाहते हैं तो माप देते समय वह चप्पल या उस जैसी समान चप्पल अवश्य पहनें।
- एक अच्छा और सटीक मापन यंत्रा (इंच टेप) का प्रयोग कीजिए। उसका स्तर आप जमीन या फर्श के समकालीन/समांतर रखने का प्रयास करें। यह क्षैतिज मापन में सही व सटीक माप लाने में सहायक है।
- पुरानी कहावत ध्यान रखें – दो बार मापें और एक बार कपडा काटें।
- यदि आप अपने स्वय के मापन हेतु किसी अन्य व्यक्ति की मदद लें, तो यह बेहतर होगा।

- मापन लेने वाला व्यक्ति मापन देने वाले व्यक्ति के दायें तरफ खडा
- हो। सभी परिधि मापन को इंच टेप को पफर्श के सामान्तर रख कर लिया जाता है। साथ ही यह इतना ढीला होना चाहिए कि दो उंगली आराम से माप में आ सकें।